आपको जानकर आश्चर्य होगा कि.....

1. **जिसे आप पीढ़ियों से याद करते आए हैं, वह भगवान कण-कण में व्यापक नहीं है, एकव्यापी है।**

गीता में भगवान ने धर्म की अति ग्लानि होने पर, धर्म की रक्षा करने के लिए धरती पर अवतार लेने का जो वचन दिया है, उससे सिद्ध होता है कि वह इस सृष्टि के कण-कण में व्यापक नहीं है, अपितु गीता में ही दिए गए ज्ञान के अनुसार, परमधाम का रहनेवाला है और जब वह इस धरती पर अवतार लेता है तो राम-कृष्ण जैसे देवताओं की तरह जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता, अपितु एक साधारण मनुष्य-तन में प्रवेश करता है तथा सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देकर और राजयोग सिखाकर, मनुष्य से देवता बनाता है।

2. **विश्व के सर्व शास्त्रों में शिरोमणि श्रीमद् भगवद्गीता के रचयिता साकारी श्री कृष्ण नहीं, अपितु निराकारी शिव-शंकर भोलेनाथ हैं।**

भगवद्गीता में ईश्वर की जो परिभाषा दी गई है कि वह अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता, अजर, अमर, अविनाशी है, वह सिर्फ 5000 वर्ष के अंतिम क्षणों में एक बार साधारण मनुष्य रूप में होने वाले भगवान शिवशंकर भोलेनाथ के अवतरण के लिए लागू होती है, न कि जन्म-मरण के चक्र में आने वाले देवता श्री कृष्ण के लिए।

3. **इस सृष्टि-चक्र या कल्प की आयु लाखों वर्ष नहीं, अपितु 5000 वर्ष है।**

एक तरफ तो हम कहते हैं कि भारत का इतिहास 5000 वर्ष पुराना है और दूसरी तरफ हम कहते हैं कि हर युग की आयु हज़ारों-लाखों वर्ष है; पर सच्चाई तो यह है कि इस सृष्टि-चक्र की आयु सिर्फ 5000 वर्ष है, जिसमें चार युग होते हैं - सतयुग एवं त्रेतायुग (जब सृष्टि पर स्वर्ग होता है) और द्वापरयुग एवं कलियुग (जब सृष्टि पर नर्क होता है)। कलियुग और सतयुग के संगम पर परमपिता परमात्मा शिव स्वयं इस सृष्टि पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा 'आदि सनातन देवी-देवता' धर्म तथा वसुधैव कुटुम्बकम् की स्थापना करते हैं।

4. **मनुष्य आत्माएँ 84 लाख योनियों में नहीं, अपितु सिर्फ मनुष्य योनि में जन्म लेती हैं।**

परमपिता परमात्मा शिव, जो कि जन्म-मरण के चक्र में नहीं आते, कल्प के पुरुषोत्तम युग पर आकर बताते हैं कि मनुष्य-आत्मा अपने पाप और पुण्य कर्मों का फल मनुष्य के रूप में ही भोगती है, न कि पशु-पक्षी या पेड़-पौधों के रूप में तथा 5000 वर्ष के इस सृष्टि-चक्र में मनुष्यात्मा 84 जन्म लेती है, न कि 84 लाख योनियों में।

5. **हमारे जन्म-जन्मांतर के पाप गंगा-स्नान से नहीं, अपितु भगवान के दिए ज्ञान की गंगा में नित्य स्नान करने से धुल सकते हैं।**

परमपिता परमात्मा शिव आकर बताते हैं कि द्वापर और कलियुग में देह-अभिमान के कारण, हम मनुष्यों ने विभिन्न धर्म-मत-परंपराएँ अपनाकर, अंधश्रद्धावश पत्थर की मूर्तियों को और पाँच तत्वों

को ईश्वर मान लिया और अपने पापों से छुटकारा पाने के लिए, पानी की गंगा में नहाते रहे; पर हमारे पाप तो बढ़ते ही रहे। अब भगवान कहते हैं कि हमारे जन्म-जन्मांतर के पाप गंगा-स्नान से नहीं, अपितु ईश्वरीय ज्ञान-गंगा में नित्य स्नान करने और उस ज्ञान को जीवन में धारण करने से ही धुलेंगे।

6. निराकारी परमपिता शिव और आकारी शंकर एक नहीं हैं, अपितु अलग-अलग हैं।

परमपिता शिव आकर बताते हैं कि मैं त्रिदेवों अर्थात् सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, पालनकर्ता विष्णु और विनाशकर्ता शंकर का भी रचयिता हूँ। शंकर तो आकारी, शरीरधारी, विनाशकारी हैं, जबकि शिव निराकारी, सत्यम्, शिवम् अर्थात् कल्याणकारी और सुंदरम् हैं। निराकारी शिव पुरुषोत्तम संगमयुग पर आकारी शंकर के तन द्वारा संसार में प्रत्यक्ष होते हैं, इसलिए देह-अभिमानी मनुष्य शिव और शंकर को मिलाकर एक कर देते हैं।

इन्हीं सब बातों की अधिक जानकारी प्राप्त करने और इन पर चर्चा करने के लिए पधारें या बात करें-